केला

इन्टर्कल्चरल ऑपरेशनस

खरपतवार नियंत्रण

पहले चार महीनों के दौरान नियमित रूप से निराई महत्वपूर्ण है। सामान्यत: कुदाली का प्रयोग किया जाता है और खरपतवार नियंत्रण हेतु वर्ष में चार बार कुदाली का प्रयोग प्रभावी होता है। समेकित खरपतवार प्रबंधन उत्पादन वृद्धि में सहयोग देगा जिसमें फसलों को कवर करना, हरबीसाडिस का विवेकपूर्ण उपयोग, इन्टरक्रापिंग और हैंड विडिंग सम्मिलित हो, जहां कहीं भी आवश्यक हो। डायरोन (1 कि.ग्रा.ऐ.आई/ हेक्टेयर) का पूर्व उद्भव प्रयोग केलों की गुणवत्ता और उपज पर प्रभाव डाले बिना व्यापक-लीवड खरपतवार और घास को नियंत्रित करने में प्रभावी है। लोबिया की डबल फसल खरपतवार वृद्धि को दबाने में समान रूप से प्रभावी है।

इन्टर्क्रापिंग

इन्टर्क्रापिंग को आसानी से ग्रोथ के प्रारंभिक चरणों में केला बागान में बढ़ाया जा सकता है। इन्टरक्रॉप के रूप में सब्जी और फूल फसलों जैसे मूली, फूलगोभी, बंदगोभी, पालक, मिर्च, बैगन, भिण्डी, लौकी, गेंदा और रजनीगंधा को सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। दक्षिण भारत में सुपारी, नारियल और कसावा सहित मिश्रित फसलों को उगाना सामान्य है और बड़े पैमाने पर इस पद्धति को अपनाया गया है।

डेशूकरिंग

जीवन चक्र के दौरान, केला भूमिगत तने से अधिकांश सकरस उत्पन्न करता है। यदि इन सभी सकरों को उगने दिया जाए तो यें मूल पौध की ग्रोथ की लागत पर उगते हैं और इसलिए सकर का विकास रूक जाता है। केले की खेती में अवांछनीय सकरों का निष्कासन अधिकांश नाजुक आपरेशनों में से एक है और जिसे डेशूकरिंग के रूप में जाना जाता है। ऐसे सकरों को या तो उनकी कटिंग करके हटाया जाता है या मूल पौध से सकर को अलग किए बिना उनकी सत्व को समाप्त कर दिया जाता है। 5-6 सप्ताह के अंतराल पर कार्म के हिस्से सहित सकरों के निकाले जाने से शूटिंग मे तेजी और फसल में वृद्धि होती है।

अर्थिंग अप

फुरो रोपण के मामले में, बरसात के मौसम के दौरान पानी के जमाव को रोकने के लिए अर्थिंग अप किया जाना चाहिए जबकि गर्मियों और सर्दियों के दौरान पौधे फुरो में होने चाहिए।

प्रापिंग

प्रापिंग आपरेशन तेज हवा गति वाले क्षेत्रों में किया जाता है। विशेषकर, बंच एमरजैन्स के समय पर बम्बौ के साथ पैसूडोसटमों को टिकाया जाता है।

पत्ता हटाना

फालूत पत्तियों की छटाई करने से पुरानी पत्तियों से फैलने वाली बिमारियों को कम करने में मदद मिलती है। पत्तियों की छटाई से माइक्रोक्लाइमेट के तापमान और प्रकाश को बदला जा सकता है। बंच इनीटेशन से पहले पत्तियों की छटाई करने से फलावरिंग और हार्वेस्टिंग में देरी होती है। अधिकतम उपज के लिए कम से कम 12 पत्तियों को रोका जाना चाहिए।

गुच्छा कवर

बागान मालिकों द्वारा इस्तेमाल की गई बैगिंग (गुच्छा कवर) एक कल्चरल तकनीक है जहां पर निर्यात क्वालिटी के केलों की खेती की जाती है। यह पद्धति गुच्छों को ठंड, तेज सूरज की रोशनी, कीटों का आक्रमण और भोंरो के दागों से बचाव करती है। इस पद्धति से फलों की निश्चित दिखाऊ गुणवत्ता में सुधार होता है। भारत में सुखे पत्तों के साथ गुच्छों को बांधना एक आम बात है।

मेल फलॉवर बड को हटाना

फिमेल फेज के पूरा होने के बाद मेल बड को हटाना आवश्यक है। फल सेटिंग की प्रक्रिया एक बार पूरी हो जाती है, रेकिस प्रफुल्लता को पिछले हाथ से परे होने पर काट देना चाहिए अन्यथा यह फल विकास की लागत पर बढता है। यह गुच्छों की शीघ्र परिपक्वता में मदद करता है।